B.A. PART-1
हिन्दी (प्रतिष्ठा) - द्वितीय पत्र
मध्ययुगीन इतिहास एवं काव्य

प्रश्न :- रीतिकालीन कवि भूषण पर एक टिप्पणी लिखें ?

उत्तर :- जीवन-वृत्त :-
तिकवांपुर निवासी रत्नाकर (उपनाम रत्नाकर) के पुत्र भूषण हिन्दी में वीररस के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। शुक्लजी इनका जन्म संवत 1670 में मानते हैं, इनका वास्तविक नाम क्या था, यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता। भूषण की उपाधि इन्हें चित्रकूट के सोलंकी राजा रुद्रदेव से प्राप्त हुई थी। कुछ आलोचक भूषण इनका वास्तविक नाम मानने लगे हैं, भूषण कई आश्रयदाताओं के पास रहे हैं। अधिकतर समय इन्होंने शिवाजी और छत्रसाल के पास बिताया।

रचनाएँ :-
इनकी 1. शिवराज भूषण 2. ~~शिवाबावनी~~
2. शिवाबावनी 3. छत्रसाल दशक, ये तीन रचनाएँ प्रकाशित हैं। 'भूषण उल्लास', 'दूषण उल्लास' 'भूषण हजारा' इनकी तीन और रचनाएँ कही जाती हैं। 'शिवराज भूषण' अलंकार-ग्रंथ है, 'शिवाबावनी' तथा 'छत्रसाल दशक' फुटकल संकलन हैं, जिनमें शिवाजी और छत्रसाल की वीरता का गान है।

आचार्य रूप में :-
'शिवराज भूषण' भूषण का अलंकार-ग्रंथ है, इसमें अलंकारों के लक्षण देने के उपरान्त शिवाजी की वीरता से सम्बन्धित कवित्त और सवैया उदाहरण के रूप में दिए गए हैं। भूषण के आचार्यत्व के विषय में यही कहना उचित है कि उनके आचार्यत्व की प्रेरणा ऊपरी है, और इस क्षेत्र में इनका महत्व नगण्य है। अलंकारों के लक्षण अस्पष्ट हैं, पर उदाहरण सरल बन पड़े हैं।

कवि रूप में :-

भूषण हिन्दी के एकमात्र सच्चे वीरकवि हैं। उनके कुछेक पद्य शृंगार के भी हैं, भूषण ने शिवाजी और छत्रसाल की वीरता का गान किया है। उन्होंने शिवाजी के रूप में एक महान् राष्ट्रसंरक्षक व्यक्तित्व के दर्शन किए और उसके भीतर 'राम' और 'कृष्ण' की अद्वितीय शक्ति को देखा। भूषण ने इस प्रकार रीतिकालीन कवियों की तरह राजाओं की झूठी प्रशंसा नहीं की, वरन् एक लोकरक्षक चरित्रनायक का गान किया है। आचार्य शुक्ल इस विषय में कहते हैं — "भूषण ने जिन नायकों को अपने वीर काव्य का विषय बनाया वे अन्याय दमन में तत्पर, हिन्दू-धर्म के रक्षक दो इतिहास-प्रसिद्ध वीर थे।" भूषण की कविता एक खुशामदी कवि की कविता नहीं। इनका महत्व आचार्य के रूप में नहीं, वीररस के कवि के रूप में सदैव मान्य रहेगा। वीररस का एक उदाहरण नीचे द्रष्टव्य है। —

इंद्र जिमि जंभ पर बाड़व सुअम्भ पर,
रावन सदम्भ पर रघुकुल राज हैं।
पौन बारिबाह पर सम्भु रतिनाह पर,
ज्यों सहस्रबाहु पर राम द्विजराज हैं।
दावा द्रुमदण्ड पर, चीता मृगझुण्ड पर,
भूषण वितुण्ड पर जैसे मृगराज हैं;
तेज तम अंस पर, कान्ह जिमि कंस पर,
त्यों म्लेच्छ-वंस पर, सेर सिवराज हैं॥

वीरकवि के साथ-साथ भूषण हिन्दी के सच्चे राष्ट्रीय कवि हैं। कुछ आलोचकों ने इन्हें हिन्दू जाति का कवि माना है और उन पर जातीयता एवं साम्प्रदायिकता का आरोप लगाया है, परन्तु उनका यह आरोप उचित प्रतीत नहीं होता। भूषण की कविता शिवाजी के चरित्र को सुशोभित करती है और शिवाजी हमारी राष्ट्रीयता को

शोभा प्रदान करते हैं। शिवाजी की तलवार और भूषण की लेखनी दोनों राष्ट्रीयता के लिए सजग थीं।

भावों के अनुकूल भूषण की अभिव्यंजना-पद्धति भी ओजपूर्ण है। भाषा की दृष्टि से परीक्षा करने पर भूषण की भाषा अव्यवस्थित ही प्रतीत होती है, उसमें व्याकरण की अनेक ~~अशुद्धि~~ अशुद्धियाँ हैं और शब्दों को तोड़ा-मरोड़ा गया है। यहाँ यह भी कहा जा सकता है कि ऐसा कवि ने वीररस की ओजमयी अभिव्यक्ति के लिए ही किया है।

भूषण निस्सन्देह तुलसी के उपरान्त हिन्दी काव्य में लोकनायक कवि के रूप में सर्वत्र प्रसिद्ध रहेंगे।

अभ्यासार्थ प्रश्न

प्रश्न — भूषण के जीवन-वृत्त या भूषण पर एक टिप्पणी लिखें

पता:-
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग — हिन्दी (S.R.A.P) (B.R.A.B.U.M)
मोबा० — 7909046087
दिनांक - 04/10/2022